अध्याय 2 पद

—मीरा

कविता का सारांश

प्रस्तुत पाठ में संकलित 'पद' मीरा ग्रंथावली से लिए गए हैं। कवयित्री मीराबाई ने इन दोनों पदों में अपने आराध्य श्रीकृष्ण को सम्बोधित किया है। मीरा अपने आराध्य से मनुहार (प्रार्थना) भी करती हैं, लाड़ भी लड़ाती हैं और मौका आने पर उलाहना देने से भी नहीं चूकतीं। उनकी क्षमताओं का गुणगान एवं स्मरण करती हैं और उन्हें उनके कर्तव्य याद दिलाने में भी देर नहीं लगातीं।

पहले पद में, कवयित्री मीरा, भगवान श्रीकृष्ण भक्तों के प्रति प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि श्रीकृष्ण अपने भक्तों के दुख हरने वाले हैं। जैसे उन्होंने द्रोपदी के चीर (साड़ी) बढ़ाकर उसकी लाज रखी, भक्त प्रहलाद की नरसिंह रूप धारण कर के जान बचाई, ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया, उसी प्रकार अपनी इस दासी अर्थात् भक्त के भी दु:खों का नाश कर दें, उनके दु:खों को हर लें।

दूसरे पद में मीरा कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति व प्रेम भावना को उजागर करते हुए कहती हैं। कि श्रीकृष्ण उन्हें नौकर (सेविका) बना कर रख लें। मीरा हर प्रकार से श्रीकृष्ण के पास रहना चाहती हैं। इसलिए वे कहती हैं कि नौकर बनकर वे बगीचा लगाएँगी ताकि इसी बहाने नित्य प्रात: प्रभु के दर्शन कर सकें। वृंदावन की संकरी गलियों में गोविन्द की लीला का गुणगान करेंगी। वे कहती हैं कि नौकर बनकर उनको तीन फायदे होंगे–उन्हें हमेशा श्रीकृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे, उनकी याद नहीं सतायेगी, भक्ति रूपी भाव का साम्राज्य बढ़ता जाएगा। वे कहती हैं मोहनमुरली वाले ने पीले वस्त्र, मोर के पंख व वैजयन्ती फूल की माला धारण किए हुए है और वृंदावन में वे गाय चराते हैं। वे ऊँचे–ऊँचे महल बनाकर उसकी खिड़कियों से, कुसुम्बी साड़ी पहनकर, श्रीकृष्ण का दर्शन करेंगी। वे अपने प्रभु गिरधर गोपाल के दर्शन के लिए बहुत बेचैन है। तभी वे आधी रात को ही यमुना जी के तट पर उनके दर्शन ना चाहती हैं।

पाठ पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)

(25-30 शब्दों में)

प्रश्न 1. 'द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।' इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए। (सी.बी.एस.ई. 2020, Delhi Set-I) 2

उत्तर– 'द्रौपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।' इस कथन का भाव यह है कि द्रौपदी की लाज बचाने के लिए कृष्ण ने कौरवों की सभा में द्रौपदी चीर–हरण के समय द्रौपदी का चीर बढ़ाया था। इस पद में हरि से अपनी पीड़ा को हरने की विनती करती हुई मीरा चाहती है कि उसी प्रकार अपनी इसी मर्यादा के अनुरूप ही हरि उनकी पीड़ा का भी हरण कर लें।

AI प्रश्न 2. मीराबाई ने श्रीकृष्ण से अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना किस प्रकार की है? अपने शब्दों में लिखिए।

(सी.बी.एस.ई. 2019, Delhi Set-I) 2

उत्तर–
- द्रौपदी, गजराज, प्रहलाद का उदाहरण देकर
- आम जनता के दु:ख को दूर करना। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2019) 2**

व्याख्यात्मक हल :

मीराबाई श्रीकृष्ण से बड़े विनम्र शब्दों में अपना उद्धार करने तथा अपनी पीड़ा हरने की विनती करती हैं। मीरा कृष्ण को उनके दयामय रूप का स्मरण कराती हैं कि आपने जिस प्रकार द्रौपदी का चीर बढ़ाकर द्रौपदी की लाज बचाई, भक्त प्रहलाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप धारण किया तथा डूबते गजराज को मगरमच्छ के मुँह से बचाया वैसे ही आप मेरी पीड़ा भी दूर करो, मुझे सांसारिक बंधनों से मुक्त कर अपने चरणों में स्थान दीजिए।

प्रश्न. 3. चाकरी से मीरा को क्या लाभ मिलेगा ? (सी.बी.एस.ई. 2016, 2015, Term I)2

उत्तर– चाकरी से मीरा को कृष्ण दर्शन का लाभ मिलेगा। वह नित्य श्रीकृष्ण के दर्शन कर सकेंगी और वृन्दावन की कुंज गलियों में गोविन्द की लीलाओं का गान कर सकेंगी। जिससे उन्हें भक्तिभाव का साम्राज्य प्राप्त हो जाएगा।

प्रश्न. 4. मीरा कृष्ण को अपना प्रियतम मानती हैं। उनकी भक्ति में प्रेम का पुट अधिक है। सिद्ध कीजिए।

(सी.बी.एस.ई. 2016, Term I)2

उत्तर— मीरा कृष्ण को अपना प्रियतम मानती हैं। इसलिए वह उनके सुन्दर छबीले रूप की आराधना करती हैं और कुसुंबी लाल साड़ी पहनकर आधी रात के समय उनसे यमुना तट पर मिलना चाहती हैं। इससे स्पष्ट है कि उनकी भक्ति में प्रेम का पुट अधिक है।

प्रश्न. 5. 'द्रोपदी की लाज राखी' के आधार पर भगवान के रक्षक-रूप का वर्णन कीजिए। मीरा के पद के आधार पर लिखिए।

(सी.बी.एस.ई. 2016, Term I)2

उत्तर— कृष्ण अपने भक्तों और प्रियजनों की रक्षा करने वाले हैं। द्रौपदी की लाज बचाकर उन्होंने यह साबित कर दिया।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) 2

व्याख्यात्मक हल :

भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्तों और प्रियजनों की रक्षा करने वाले हैं। एक बार पांडवों ने जुए में द्रौपदी को दाँव पर लगा दिया और हार गए, कौरव जीत गए। दुर्योधन ने अपने भाई दु:शासन को आदेश दिया कि वह द्रौपदी को सभा में खींच लाए और उसे निर्वस्त्र कर दे। तब किसी पांडव ने उसकी रक्षा नहीं की। द्रौपदी ने मन ही मन श्रीकृष्ण को याद किया। श्रीकृष्ण प्रकट हुए और उन्होंने द्रौपदी का चीर बढ़ाकर उसकी लाज बचाई।

प्रश्न. 6. मीरा कृष्ण के लिए कुसुम्बी साड़ी क्यों पहनना चाहती हैं ? **(सी.बी.एस.ई. 2015, Term I) 2**

उत्तर—
- कृष्ण भी पीताम्बर धारण करते हैं।
- कुसुम्बी साड़ी जोगन मीरा के अनुकूल है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) 2**

व्याख्यात्मक हल :

मीरा कृष्ण दर्शन के लिए कुसुम्बी साड़ी इसलिए पहनना चाहती हैं क्योंकि वह अपने आप को पीताम्बर धारण करने वाले कृष्ण के सामने जोगन के रूप में प्रस्तुत करना चाहती हैं। कुसुम्बी साड़ी जोगन मीरा के अनुकूल है क्योंकि कुसुम्बी का अर्थ है- गहरा लाल। यह रंग प्रेम का प्रतीक है। मीरा कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर कृष्ण के प्रति अपना प्रेम प्रकट करना चाहती हैं।

प्रश्न. 7. मीराबाई के अनुसार, श्रीकृष्ण का रूप-सौंदर्य किस प्रकार का था ? **2**

उत्तर— मीराबाई के अनुसार, श्रीकृष्ण का रूप-सौंदर्य और मुखाकृति आकर्षित करने वाली है। उन्होंने अपने सिर पर मोर के पंखों का मुकुट पहन रखा है और गले में वैजन्ती के पुष्पों की माला है। उनके शरीर पर पीले रंग का वस्त्र अर्थात पीताम्बर सुशोभित हो रहा है। वे हाथों में बाँसुरी को धारण कर वृंदावन में यमुना के तट पर गायें चराने जा रहे हैं।

पाठ पर आधारित निबन्धात्मक प्रश्न **(प्रत्येक 4 अंक)**

(60-70 शब्दों में)

प्रश्न. 1. मीरा के पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि वह भक्त की विपत्ति दूर करने के लिए किन प्रसंगों की याद कृष्ण को दिलाती हैं और उन्हें पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तत्पर हैं?(सी.बी.एस.ई. 2019, Outside Delhi Set-II) 4

उत्तर—प्रसंग
- चीर हरण के समय द्रौपदी की लाज रखना
- प्रह्लाद की रक्षा हेतु नरहरि रूप धारण करना
- मगरमच्छ से गजराज की रक्षा करना

कार्य
- कृष्ण की चाकरी करना
- बाग लगाना
- श्रीकृष्ण की लीला का गान
- ऊँचे-ऊँचे महल और उनमें बड़े-बड़े झरोखे बनवाना
- आधी रात को भी मिलने के लिए तैयार रहना **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2019) 4**

व्याख्यात्मक हल :

मीराबाई 'हरि आप हरो.....' पद के माध्यम से श्रीकृष्ण को याद दिलाती हैं कि जिस प्रकार दु:शासन द्वारा द्रौपदी के चीरहरण के समय आपने द्रौपदी की लाज रखी; अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए नरसिंह रूप धारण किया तथा गजराज के मुख से अपना नाम सुनकर उसकी रक्षा की, वैसे ही आप मेरी भी सहायता कीजिए।

मीराबाई श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिए उनकी चाकरी करना, श्रीकृष्ण के घूमने-फिरने वे लिए बाग लगाना तथा वृंदावन की गलियों में घूमकर श्रीकृष्ण की लीला का गान करना, ऊँचे-ऊँचे महल बनवाना जिनमें झरोखे हों और जिनके बीच में फुलवारी हो, चाहती हैं। उसका हृदय प्रभु के दर्शन को इनका व्याकुल है कि वह सुबह तक का इंतजार नहीं कर सकती और आधी रात को ही उनसे मिलने को तैयार है।

AI प्रश्न. 2. मीराबाई की भाषा-शैली किस प्रकार की है? **4**

उत्तर— मीराबाई की भाषा-शैली भक्ति, दैन्य और माधुर्यभाव की है। इन पर योगियों, संतों और वैष्णव भक्तों का सम्मिलित प्रभाव है। मीरा के पदों की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है। कहीं-कहीं पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी भाषा के प्रयोग भी मिल जाते हैं। मीराबाई में अभूतपूर्व काव्य क्षमता थी। मीराबाई के पदों ने जन सामान्य को अधिक प्रभावित किया, क्योंकि उन्होंने अपने मन के भावों को सीधे सरल शब्दों में व्यक्त किया है। इनके पद गेय एवं संगीतात्मक शैली से युक्त हैं।

प्रश्न. 3. मीरा के पदों का सार अपने शब्दों में लिखिए। **4**

उत्तर— हमारी पाठ्य-पुस्तक में मीरा रचित दो पद संकलित हैं। इनका सार निम्न प्रकार से है—

(i) प्रथम पद में मीरा ने श्रीकृष्ण को अपना संरक्षक माना है। उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की है कि वे मीरा की रक्षा करें। कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी थी। प्रह्लाद के लिए नरहरि अवतार लिया था। डूबते हुए हाथी को बचाया था। अत: वह अब अपनी दासी मीरा की रक्षा करें।

(ii) दूसरे पद में मीराबाई अपने प्रियतम कृष्ण के समीप रहने के लिए उनकी सेविका बन जाना चाहती हैं। वह चाहती हैं कि उन्हें वृंदावन में श्रीकृष्ण के बाग-बगीचे लगाने का सौभाग्य मिले। इसी बहाने वे नित्य प्रात: उठकर प्रभु के दर्शन करेंगी। दिन-रात उन्हें याद करेंगी और उनकी लीला के गुण गाएँगी। वह पीताम्बरधारी साँवले श्रीकृष्ण की आराधना में लीन होना चाहती हैं। उसका हृदय प्रभु के दर्शन पाने के लिए बहुत व्याकुल है।

सामान्य त्रुटियाँ

- अधिकांश छात्र प्रश्नों के उत्तर कविता का भाव समझकर नहीं लिखते तथा उत्तर में पर्याप्त उदाहरण नहीं लिखते।
- छात्र प्रश्नों के उत्तर लिखने में अपने विचार नहीं बल्कि किताबी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।
- छात्र पाठ में निहित प्रह्लाद नरसिंह, कुंजर, मगरमच्छ, द्रौपदी आदि प्रसंगों से अनभिज्ञ होने के कारण प्रश्नों के उत्तर देने में भ्रमित होते हैं।
- छात्र कुसुंबी, कुंजर जैसे—कठिन शब्दों को समझने में असमर्थ रहते हैं।

निवारण

- छात्रों को कविता के भावों का गहराई से अध्ययन करना चाहिए।
- पाठ से संबंधित प्रसंगों को समझने के लिए कक्षा में अध्यापक की सहायता लेनी चाहिए।
- पाठ में आए कठिन शब्दों का अभ्यास करना चाहिए।

●●